विदुर घर आए बाँके बिहारी

विदुर घर आए बाँके बिहारी

विदुर, घर आए, बाँके बिहारी ॥
बाँके, बिहारी जी, बाँके बिहारी ॥
विदुर, घर आए, बाँके बिहारी...

श्याम को, देख, मगन बिदुरानी ।
फूली, मन में, ना हीं समानी ॥
आँगन, में ठाढ़ी सुध, बुद्ध बिसारी ।
विदुर, घर आए, बाँके बिहारी...

बिदु, रानी अति, मगन भई है ।
तन, मन की उन्हें, सुध ही नहीं है ॥
कहाँ पे, बिठाऊँ मैं, कृष्ण मुरारी ।
विदुर, घर आए, बाँके बिहारी...

फ़ल, छीले और, प्रभु को ज़िमाए ।
कृष्ण, को छिलका, वो देती जाए ॥
खुश, होके खाए देखो, कृष्ण मुरारी ।
विदुर, घर आए, बाँके बिहारी...

प्रबल, प्रेम की, धारा बह रही ।
फल, फेंके और, छिलका खिलाए रही ॥
आनंद, बड़ा आए ये, कहते मुरारी ।
विदुर, घर आए, बाँके बिहारी...

भजे, प्रेम से, जो गिरधारी ।
साँवरिया है, प्रेम पुजारी ॥
भक्तों, के मन भाए, चक्र धारी ।
विदुर, घर आए, बाँके बिहारी...

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36523/title/vidur-ke-ghar-aaye-banke-bihari

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |